

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
मंगलाचरण	१
नववाड़ ब्रह्मचर्यकी	२ से २४
शीलकी ३२ ओपमा	२५ से ३०
शीलका सोले कड़ा	३१ से ४०
विजयकुंवर विजयाकुंवरीका स्तवन	४१ से ५१
ब्रह्मचर्यकी नववाड़ दोहा	५२ से ५६
डाल शीलरी	५६ से ५८
शिचापाठ ब्रह्मचर्यविषे सुभाषित दोहा	५८
शीलका सवैया	५९ से ६०
शीलका दोहा	६१ से ६२
रतनकुंवरकी सज्जाय	६३ से ६६
तिलोकसुंदरी रो व्याख्यान	७० से ८७



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्रीश्रीललरत्नसारसंग्रह

मंगलाचरण

अहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय

सर्व साधुभ्यो नमः ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दोहा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अरिहन्ता अरिहन्तर्जा, सिद्ध श्रद्धा दातार ।

आचारज उवभाय मुनि-राज वश उरधार ॥

साखेरे । धन धन साधु वैरागी ॥१॥ नारी इके-
लीसुं वात न करीये ॥ तिणसेतो निश्चय
डरिये रे । धन० ॥ २ ॥ धर्म कथा न कहे तिण
आगे । जिण दिठां मन मद् जागेरे ।
धन० ॥ ३ ॥ कोई नर नारी दृष्टी आवे तो,
आंगुलीयां दिखलावेरे । धन० ॥ ४ ॥ दोषी
दुर्जनके निजरां आवे । तो शील कलंक चढ़ा-
वेरे । धन० ॥ ५ ॥ वनिता (स्त्रीना) वचने रति-
पति खोभे । इम संजम नहीं सोभेरे । धन०
॥ ६ ॥ पात भड़े पवन प्रसंगे । तो शील तणो
वन भंगेरे । धन० ॥ ७ ॥ मनमें जाणे हूं शीले
साचा । पिण जग सहु माने काचारि । धन०
॥ ८ ॥ नीच दूर धर्की जे निरस्त्री । ए ना रसना
स्वाद ले परवारि । धन० ॥ ९ ॥ दीपक देख पत-
न्या भंभे । तिम नारीसुं ब्रह्मचारी कंभेरे । धन०
॥ १० ॥ इण दृष्टान्ते थे ब्रह्मचारी । थे तो वस्तीमें
रहिजो वीचारि । धन० ॥ ११ ॥ बीजा वाड़ इण
पर राखे । अगरचन्द मुनि भापे रे । धन० ॥ १२ ॥

अथ नववाड़ ब्रह्मचर्य्य की लिख्यते । ७

हो, श्रीजिन, जिहां तिहां वेसे नार । मुहूर्त्त एक
तिहां लगे हो, श्रीजिन, नहीं वेसे ब्रह्मचार,
श्रीजिन, सां० ॥४॥ पुत्री पट वर्षा तणी हो,
श्रीजिन, ते पिण सेज्यारे मांय । इम जाणी
सेवे नहीं हो, श्रीजिन, नारीनो आसन ताम,
श्रीजिन, सां० ॥५॥ आसन सेव्यां नारनो हो
श्रीजिन, भाजो शील अखंड । कवड़ी सट नहीं
वेचीये हो, श्रीजिन, गुण मणी रत्न करंड,
श्रीजिन, सां० ॥६॥ आसन फरस्यां एवड़ा हो,
श्रीजिन, बाले दोष भगवंत । ते काया फरसे जे
नरा हां, श्रीजिन, चिहुं गत मांहि भमंत, श्री
जिन, सां० ॥ ७ ॥ तिण्णर्था आसन छांडदो हां,
श्रीजिन, जां राखो तुम शील । कर्म कटक नहु
भाजनां हां, श्रीजिन, लेसो अनुक्रमे लील,
श्रीजिन, सां० ॥ ८ ॥ रमणी करे वेत्तणां हां,
श्रीजिन, नहीं वंस गुणवंत । विगड़े ब्रह्मचर्य
मांटको हां, श्रीजिन, दुधमें लूणनो दृष्टान्त,
श्रीजिन, सां० ॥९॥ स्फटिक रत्न जिस निमलो



अथ नववाइ ब्रह्मचर्य की लिख्यते । ५६

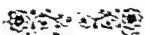
कामण फेरा रे काम कटकने, मत जोइजो रे
कोय । भंड कुवेष्टा रे निरखत खिणे, भाजे
शील अमोल ॥ धन० ॥ २ ॥ चिहुंगत रूपी रे
कूप जगतने, रमणी विषय विकार । रत्न अमो-
लक भाजे नेहयी, निरख्यां मैप दीदार । धन०
॥ ३ ॥ कामण फेरा शास्त्र विनोदरा, नहीं वांचीजे
ब्रह्मचार । शीलरत्नग रे जो तुमे लालची-
विषिया विषय निवार । धन० ॥ ४ ॥ जिम कोई
पंथीरे चाल्यो मारगे, मिलियो तत्तकर आय ।
धन कंचणरे मूल नमायने, पंथी निर्धन पाय ।
धन० ॥ ५ ॥ जिम ब्रह्मचारी रे शिवपुर पंथीयो,
भरीयो शील तखो धन माल । कामण रूपी रे
तत्तकर आय मिल्यो, दीयो शील लुंटाय ।
धन० ॥ ६ ॥ जिम कोई अंधक दैश बचन बनी,
दिनकर (सूर्य) तानो मती जोय । पडल
तखो दुख भांजली, लांवन निर्मल होय । धन०
॥ ७ ॥ वेश प्रकलते हो दिनकर रेखीयो, छि
तानो मती जोय । दचन न नान्यो तानो

चाप कवरजी । एदेशी ॥ चोमुख सिंहासन
 थयो, चमर डोले चोसठ इन्द, सोभागी । भामं-
 डल पुठे भलो, वेठा वीरजिण्ड, सोभागी,
 सुन्दर प्रत चोथो कथो ॥ ए टेर ॥ १॥ पांचमी
 वाड़ जिनेसरु, इम भाखे वचन रसाल, सोभागी ।
 अमृत चाणी उच्चरे, गुंथे भविक लोक गुण-
 माल, सो० सुं० ॥ २॥ कामण केरा गीतने, नहीं
 सुणे चित्त लगाय, सो० । नारी मिले बहु एकठी,
 नहीं निरखे कौतक जाय, सो० सुं० ॥ ३॥ हसे
 रमे क्रोडा करे, गावे गालने गीत, सो० तिहां
 न वसे ब्रह्मचारिजी, ब्रह्मचारीनी आइ छे रीत,
 सो० सुं० ॥ ४॥ रुदन करे हांसी करे, बोले
 नेहादिकना बोल, सो० शीलवंत नहीं सांभले,
 तिहां चंचल हुवे मन, सो० सुं० ॥ ५॥ नहीं
 सुणे नारी तणा, रुड़ा रिम भिम नेवर नाद,
 सो० सुणाना तनविण उपजे, बहु मदन तणा
 उदमाद, सो० सुं० ॥ ६॥ नर नारी रजनी समे,
 बोलं नेहादिकना वचन, सो० । शीलवंत नहीं

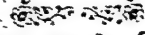
ढाल छट्ठी ।

पद्मणी बोले वीरा वादलारे ॥ ए देशी ॥ छट्ठी
 वाड़ शिरोमणीरे, गुणमणी ग्यण विशेष हो ।
 सिल्लारथ तसु सुन्दरुजी, इणपरदे उपदेश हो ।
 वीर जिणंद इम उचरेजी, वारे परखदा मभार
 हो ॥ १ ॥ ए टेर ॥ पूरव भोग नहीं चिन्तवेजी,
 चिन्तवीयां दुख धाय हो । शील रत्नका लाल-
 चीजी, विकथा न झाणो मन माय हो । वी०
 ॥ २ ॥ क्या मुक्त सुखती सुन्दरीजी, क्या मुज
 सखरी सेज हो । क्या मंदिर क्या मालीयाजी,
 इम मती चिन्तवो एज हो । वी० ॥ ३ ॥ आगे
 हुं करतो रंगतुंजी, रुड़ा भोग विलान हो ।
 हिवे इणपर वसुंजी, नहीं मुक्त रमणी पात हो
 वी० ॥ ४ ॥ इन मती चिन्तवो पटलाजी, भोग-
 बीया कोई भोग हो । मन मद गच चिन्त-
 व्यांजी, रुड़ा न फेस्ता लाग हो । वी० ॥ ५ ॥

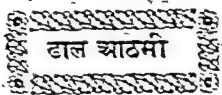
वीरं जिणंद वखाणी हो । अगर्चन्द इण पर
भाखे, सूत्रनो मर्म पीछाणी हो । त्रि० ॥ ११ ॥



दोहा ।



जगत शिरोमण सायबो, सिद्धारथनो नंद ।
आठमी वाड इम उचरे, सुणाता अमृत कंद । ११

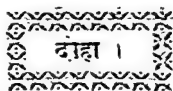


बाल आठमी

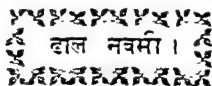
उंची चढ़ देखुं हो लुगायांरो टोलो आवतो
॥ एदेशी ॥ त्रितलादेरा नन्दन हो स्वामीजी
त्रिगड़े बैसने, इणपर दे उपदेश । निर्मल राखो
हो वैरागी वाड आठमी, पामो सुख विशेष ।
त्रि० ॥ १॥ अति घणो भोजन हो सुज्ञानी साधु
मती करा, इम नहीं पलसी शील । अल्प आहार
हो साधुजी सुख पामतो, करतो शिवपुर लील ।
त्रि० ॥ २॥ अति आहार हो साधुजी व्रत भाजतो,
सुपनेमें धातो अशुद्ध । इम विचारो हो अति

अथ नववाड़=ब्रह्मचर्य की लिखने । १६

विगाड़ ॥ त्रि० ॥ १॥ ६॥ ने बेपारीने हो माथे संस
चहु धयो, पिछतावे अणपार । ओढण थोड़ो
हो मुख, इम किम सुवे, लाम्बा पांव पसारण ।
त्रि० ॥ १०॥ अल्प आहारे हो सुत्र पावे जीवड़ी,
नहीं हुवे रोग विकार । व्रत पण सेंढो हो थावे
गुणवन्तजी, वेगा उतरसो पार । त्रि० ॥ ११॥
इण दृष्टाने हो राखो वाड़ आठमी, जे नर चतुर
सुजान । अगरचन्द हो भाखे नुड़ी देशना,
हिंवे नवमी वाड उच्चारणु त्रि० ॥ १२॥



जग मंडल जिनगजीयो, मांचो परम दयाल ।
नवमी वाड़ इम उच्चरं, पट जीवां प्रतिपाल ॥ १॥



फासु पाणी पीयो चारो चरो, बेठो ठंडो आय
हो ॥ ए देशी ॥ हिंवे श्री वीर जिएंदजी, गुम्-

धन० ७ ॥ संठाणा में समचोरस मोटो, ध्यान
 शुक्ल वड़ धीररी माइ । पांच ज्ञानमें केवल मो-
 टो, शीलव्रत शूरवीर री माइ ॥ धन० ८ ॥ पट
 लेश्या माहे शुक्ल चडेरि, साधां में तीर्थकरदेव
 री माइ । जेप्र विदेह सहु माहे मोटो, शील व्रत
 छे जेमरी माइ ॥ धन० ९ ॥ राजा में चक्रवर्त्त
 मोटो, वनामें नंदन बनरी माइ । तरुवर में
 जिम सुरतरु मोटो, शीलव्रत गुण गैहरी माइ ॥
 धन० १० ॥ रथामें कृष्ण तणो रथ मोटो, सहस्र
 फणी नागकुमाररी माइ । ओपमा केता पार
 न आवे, संचेपे वत्रीस साररी माइ ॥ धन० ११ ॥
 उत्तराध्ययन अध्ययन सोलमें, शील तणो अ-
 धिकाररी माइ । संचेपे कर रचना कीधी, जिन
 गुण न आवे पाररी माइ ॥ धन० १२ ॥ सम्वत
 अठारें वर्ष गुणीयासे. भाद्रवा सुद मासरी माइ ।
 शुक्ल पक्ष तिथि दशमी दिवसे. कियो प्रेम
 हलासरी माइ । धन० ॥ १३ ॥ खरत्तर गच्छ
 शिरोमण सुंदर, हरखचन्द गुलायरी माइ ।

शील की ३२ ओपमा

सूत्राधी प्रश्न व्याकरणजी रा चौथे संवर द्वार
में शील की ३२ ओपमा चालो छे सो कहे छे ।

१—सर्व ग्रह नक्षत्र तारा के परिवार में चन्द्रमा-
जी मोटो नै प्रधान, ज्यों सर्व व्रता में शील-
व्रत मोटो नै प्रधान ।

२—सर्व आगर में रत्नाकर आगर मोटो नै
प्रधान, ज्यों सर्व व्रता में शील व्रत मोटो
नै प्रधान ।

३—सर्व रत्नकी जात में वैडूर्य नामा रत्न मोटो
नै प्रधान, ज्यों सर्व व्रता में शील व्रत मोटो
नै प्रधान ।

४—सर्व आभरण (आभूषण) में माथेरो
मुकुट मोटो नै प्रधान, ज्यों सर्व व्रता में
शील व्रत मोटो नै प्रधान ।

५—सर्व वस्त्र में खेम युगल नामा कपास की

वज्र मोटो में प्रधान, ज्यों सर्व प्रता में
 शीतलप्रत मोटो में प्रधान । ७॥७॥

६—मरे फूल की जातमें अरविंद नामा कमल
 को फूल मोटो में प्रधान, ज्यों सर्व प्रतामें
 शीतल प्रत मोटो में प्रधान ।

७—मरे कायादिक की जातमें गोपीरां नामा
 बाधना चन्दन मोटो में प्रधान, ज्यों मरे
 प्रतामें शीतलप्रत मोटो में प्रधान ।

८—मरे पर्वत में चूतदेम नामा पर्वत शीपरी
 की मोटो में प्रधान, ज्यों मरे प्रतामें शीतल
 प्रत मोटो में प्रधान ।

९—मरे नदी में सीता गोवांदा नदी मोटो में
 प्रधान, ज्यों मरे प्रता में शीतल प्रत मोटो
 में प्रधान ।

१०—मरे समुद्र में स्वर्णकामल समुद्र मोटो में
 प्रधान, ज्यों मरे प्रतामें शीतल प्रत मोटो
 में प्रधान ।

११—मरे पर्वत में शशिह नामा पर्वत चूड़ा में

आकार मोटो नै प्रधान ज्यों सर्व व्रतां में

शील व्रत मोटो नै प्रधान ।

१२—सर्व हाथी में श्री शकेन्द्र महाराज रो ऐरा-

वण हाथी मोटो नै प्रधान ज्यों सर्व व्रता

में शील व्रत मोटो नै प्रधान ।

१३—सर्व चौपदा में केशरीसिंह नामां सिंह

मोटो नै प्रधान ज्यों सर्व व्रतां में शील

व्रत मोटो नै प्रधान ।

१४—सर्व नागकुमारजी री जात में श्रीधरेंद्रजी

मोटो नै प्रधान ज्यों सर्व व्रतामें शील व्रत

मोटो नै प्रधान ।

१५—सर्व सोवणकुमारजी री जात में वेणुदेवजी

मोटो नै प्रधान ज्यों सर्व व्रतामें शील

व्रत मोटो नै प्रधान ।

१६—सर्व सभामें इन्द्र महाराज री पांचमी

सुधर्मा सभा मोटी नै प्रधान ज्यों सब

व्रतांमें शील व्रत मोटो नै प्रधान ।

१७—सर्व देवलोक में पांचमी देवलोक

ज्यों सर्व व्रतां में शील व्रत मोटो नें

प्रधान ।

२४—सर्व ध्यानमें शुद्ध ध्यान मोटो नें प्रधान,

ज्यों सर्व व्रतांमें शील व्रत मोटो नें प्रधान ।

२५—सर्व ज्ञान में केवलज्ञान मोटो नें प्रधान;

ज्यों सर्व व्रतां में शील व्रत मोटो नें

प्रधान ।

२६—सर्व मुनिराज रं परिवार में श्रीतीर्थङ्कर

महाराज मोटो नें प्रधान, ज्यों सर्व व्रतांमें

शील व्रत मोटो नें प्रधान ।

२७—सर्व क्षेत्र में महाविदेह क्षेत्र मोटो ने

प्रधान, ज्यों सर्व व्रतांमें शील व्रत मोटो

नें प्रधान ।

२८—सर्व पर्वत में मेरु नामां पर्वत ऊंच पणे

मोटो नें प्रधान, ज्यों सर्व व्रतां में शील

व्रत मोटो नें प्रधान ।

२९—सर्व वन में नन्दनवन मोटो ने प्रधान,

ज्यों सर्व व्रता में शील व्रत मोटो नें

राचज्यो । इण जुग दलपति थया छै दासक,
आंख आणी किम उघड़े । मोड़े छे अंग करी
मुख हांसक, इण जुग दास सम राखसी । बलि
धन जोवन करे छे बिणासक, नाम छे अवला
नारनो । इन्द्र नरेंद्र करया सहु नासक, त्रिभुवन
पाय लगाबीया । निजर पड्यां करे शीलनो नासक,
विषय बधावन पापणी । दुर तज्यां मिले शिव-
पुर वासक, शील० ॥ ७ ॥

नारी रे कारण हुवा सबल संग्रामक, बड़ा बड़ा
भुपत रखा इण ठामक, कट २ मुवाजी अतिघणा ।
कुण २ नगरने कुण २ ग्रामक, कहुं छुं थोड़ीसीक
वानगी । चित्तलगाय सुणो तेहना नामक, द्रोपदी
रे परसंग थो । कृष्णजी पाड़ी पदमोतरनी मांमक,
रावण सीताने अपहरी । भारत थाप्यो छे लिद्धमण
रामक, रुक्मणीने पदमावती । कृष्णजी परख्या
छे करी संग्रामक, उदाइ चंडप्रद्योतने । ते
पिण सुवण गुलिकार काजक, अर्जुन जुद्ध किया
घणा । रतनभद्रा परणवार काजक, शील० ॥ ८ ॥

विजय कुंवर विजयाकुंवरीका स्तवन

श्री वीतराग जिनदेव नमुं शीरनामी, कहुं
शील तणो अधिकार मुगत जाय पामी । तीअँ
कच्छ देश कुशुंबो नगरी जानी, पण दक्षिण
देशमें प्रगट पणे बत्ताणी । तिहां सेठ तणा
सुत विजय कुंवर बैरागी, सुण शील नणी
महिमा मनमें लव लागी । तव हाथ जोड़ मुनि-
वर पे सांगन मांगी, हुवा मात एकमे कृपण पदना
त्यागी ॥ धन धन विजयकुंवरजी करी कुमो
कुछ नाहीं जी, जिण चित्त चोख्ले कर शील
आदर्यो भर जोवन के माहींजी ॥ १ ॥

शुद्ध पाले श्रावक धर्म ज्ञान मुख उच्चरे,
पापा प्रतिक्रमणा संवर कर कर विचरं । कर
दान दया संताप शील शुद्ध पाले, बहु बाल
ब्रह्मचारी आत्म कुल उजवाले । शुद्ध नमस्किन
धारी शंका कंवा न आण, परपावंडी गे परचा

विजया कुंवर विजयाकुंवरीका स्तवन । ४७

दिक्षा । सुवे एकरा सेज्यां सुन्दर और शाई, बेठा
बतलावे बहिन अने ज्युं भाई ॥ धन० ॥ १३॥

बेहु वीरीयां करे पांडक्रमणो ने समाई, कर
दान शीयल तप भली भावना भाई । इम वारे
वरस हुवा इमज करतां, तव बात विस्तरी शील
पणे वीचरतां । त्यां विजय कुंवरे विजया
कुंवरी केरा, श्री विमल केवली किया बखान
घणोरा । सुवे एकरा सेज्यां शील निर्मलो पाले,
बेहु बाल ब्रह्मचारी आत्मकों उजवाले । बेहु
चरम शरीरी छे महा उत्तम प्राणी, सुण अच-
रज पाया सुणी केवली मुख बाणी ॥ धन० १४॥

जिनदास श्रावकने सुपनेमें मुनिवर दीठा,
चारासी सहस्र मुनीसर लाग्या मीठा । निर-
दोषण आहार हाथों हरब बेराया. जागोने देखे
मुनिवर एक न पाया । श्री विमल केवली पासे
प्रश्न पछे, कहोजी प्रभुजी इण सुपनेको फल
शुंछे । आ बात अछती भाव तुमारा होशी.

जीसो कारज नहीं करीये । घर सारुंदान शील
तप भली भावना भावो, शुद्ध शील पालकर
लेवो मनुष्य जन्मको लावो । आठम चवदश
पांचे पूर्वी टालो, शक्ति होवे तो शील सर्वदा
पालो ॥ धन धन • ॥ २२ ॥

ये ग्रन्थ देखने गुण विजय कुंवरीना किया,
अधिके ओछेना मिच्छामि दुक्कडं लीया । जय-
णा मुख वाच्यां होती गुण अति भारी, अजय-
णा वाच्यां उल्टी होती स्वारी । मुज उपगारी
था दोलतरामजी स्वामी, गुण ग्राम किया ऋषि
लालचन्दजी तिरनामी । तन्वत अठारेते इक-
सठे अवसर पाया, श्री कोटे के रामपुरे गुण
गाया धन धन • ॥ २३ ॥

॥ इति विजयकुंवर विजयाकुंवरी का स्तवन समाप्तम् ॥

॥ दोहा ॥

तजो कंधा नारी तणी, भली दुरी संसार ।
कथा कहै जो नारी की, जाय विरति निर्धार ॥

—:६:—

(३) तीजीवाड़—ब्रह्मचारीजी स्त्री के आसण
ऊपर वैसे नहीं, जो वैसे तो घी र घड़े ने
अग्नि रो दृष्टांत ।

॥ दोहा ॥

तजो संग नारि तणो, मति को राखो रंग ।
एक ही शय्या बैठतां, होय व्रत को भंग ॥

—:७:—

(४) चौथीवाड़—ब्रह्मचारीजी स्त्री रा अंग
ऊपांग निरखे नहीं, जो निरखे तो आंख
री काचीकारी नें सूर्यको दृष्टांत ।

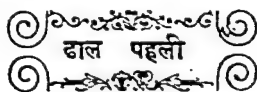
॥ दोहा ॥

गङ्गा पतङ्ग है नारी को, जैसां संन्या को वान ।
मृद्व मन लवल्या लगी, धरे निरन्तर ध्यान ॥

—:८:—

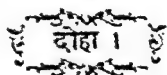


जो थे रहसो संसारमेंजी, तो हूं छुं तांहरी नार ।
जो थे संजम आदरोजी, तो हूं माहासतीयांगी
लार ॥ सो० ॥ २० ॥ ४२ ॥ मानसरवररो हंस-
लो जी, नगर वारे किम जाय । दान बीजोरा मेवा
तजीजी, म्हारे नीवोली कुण खाय ॥ सो० २० ॥
॥ ४३ ॥ अनृत वचन श्री वाईराजी, सांभलीया
रतनकुंवार । दंपती सज्जन आदरघोजी, जाण्यो
अधिर संसार ॥ सो० ॥ २० ॥ ४४ ॥ नेमजिखं-
दरी ओपनाजी, श्रीरतन कुंवर गुणसार । श्री
राजल राणी री ओपनानी, श्रीवाई गुणधार ॥
सो० ॥ २० ॥ ४५ ॥ इवरन छोड़ संजम आद-
रघोजी, दुखमो आरे नाय । तोपण भारी कग्गा
जीवनेजी, नाधु नहीं आवेदाय ॥ सो० २० ॥ ४६ ॥
पुग पुण्य ज्यांग खुलीयाजी, सेव्या नाधुनिगरंथ ।
मोध कपाय दूग मृकनें जी, पायो मुक्ति री पंथ
॥ सो० ॥ २० ॥ ४७ ॥ नांलमी बाल सुहामणी
जी, श्रीरतन गुण अमोल । नांमलना रङ्ग उपजे
जी, आप्यो जेन तंबोल ॥ सो० ॥ २० ॥ ४८ ॥



(हमीरीयारी एदेशी)

जंबूद्वीप रा भरतमें, सुदरसणपुर अभिराम
 सनेही । न्याय गुणे करि निरमलो, अरि मरदन
 नृप नाम सनेही ॥ १ ॥ शील तणी महिमा
 सुणो, एक मना नर नार स० । इणभव परभव
 सुख लहे, वरते जय जयकार स० ॥२॥ शी० ॥
 पुफदंत सेठ तिहां वसे. सत्यसिरी नामे नार स० ।
 तेहने सुत दोय दीपता, सागरदत्त चित्रसार
 स० ॥ ३ ॥ शी० ॥ जोवन वय आयां थकां,
 सागरदत्तने तिण पुर माय स० । धनवंत सेठ
 तणी सुता, रूपसुंदरी दो परणाय स० ॥४॥ शी० ॥
 वसंतपुरी जिनदत्त वसे. धनश्री नार उदार
 स० । बेटी तिलोकसुंदरी, सा परणी चित्रसार
 स० ॥ ५ ॥ शा० ॥ सुख भोगवे संसारना.
 भायारै घणो प्यार स० । माता पिता



अरु वरु आइ कहे, चित लाई धर नेह ।
 मनचाइ लीला करो, जोवन लावो लेह ॥ १ ॥
 गेणादिक मांगे जिके, हाजर करुं तयार ।
 हुं छु किंकर ताहरो, तुं मुक्त प्राण आधार ॥ २ ॥
 जेठ वचन सुण सुंदरी, कीधो कोप करूर ।
 परणी बंधे पारकी, फिट पागड़में धूड़ ॥ ३ ॥
 सती निभंछयो जेठनें, रती न मानी कुजात ॥
 कधी जाय आरचनें, भ्रातवधुनी बात ॥ ४ ॥
 रूप प्रशंसा सांभली, कोटवाल तिणवार ॥
 सती बोलावी ने कहे, कर मोसुं इकतार ॥ ५ ॥
 सती नाकायों तेहनें ॥ फिटकायों सो वार ।
 डाकण आल दोहुं देइ, गाडी पुरे वार ॥ ६ ॥



चाल भले भखे आ म्हारो । तो वेगी काढो घर-
 वारो ॥ सु० ॥ ५ ॥ एतले सती उठ जागे ।
 हाडं मांत पड्या मुख आगे ॥ सु० ॥ देख आ
 मनमें विमात्ते । भावि लिख्यो जिम थात्ते ॥ सु०
 ॥ ६ ॥ हिवे सेठ कहे बुलाई । इण घर सुं जावो
 चाई ॥ सु० ॥ सुण बात हुइ दिलगोर । इणरे
 नेणा ठलक्या नीर ॥ सु० ७ ॥ तुमसुं जोर नहीं
 तात । थांरा खुत्ती पणारी बात ॥ सु० ॥ सेठरी
 आती भराई । राख्यां रीत रहे नहीं कांई ॥ सु० ॥
 ॥ ८ ॥ सहस मोरां पकड़ाई । सती चाल बाजा-
 रमें आई ॥ सु० ॥ पूज सबलदासजी कहे सुणो
 प्यारा । भाई पापसुं हूयजो न्यारा ॥ सु० ९ ॥

 * दोहा *

खत्री-चंपक सेठरे, धरणा दीनो आय ।
 मांगे मोरा पांचसे. नहीं इणरे घर मांय ॥ १ ॥
 लोकां मिल समभाविया. पिण नहीं माने तेह ।
 अवसर देख सती तदा. वदे वचन धर नेह ॥

तुमने आपुं केम हां ॥ कां० ॥ ४ ॥ छेवट रहे
 नहीं ताहरे । क्युं खोवे दाम निकाम हो ॥ कां० ॥
 द्रव्य दस सहस आपसुं । सुण लोभ व्याप्यो
 चित तांम हो ॥ कां० ॥ ५ ॥ चंपक देवण त्यारी
 हुवो । तरे सती पृष्टे कर जोड़ हो ॥ कां० ॥ ये
 मोल लेवो किण कारणे । तद नायक बोले धर
 कोड हो ॥ कां० ॥ ६ ॥ दूजी बंधना नहीं माहरे ।
 देखी चतुराइ तुम हाथ हो ॥ कां० ॥ रसोई
 कारण मोलवुं । ए मुक्त मन री बात हो ॥ कां० ॥
 ॥ ७ ॥ दांम देइ ले चालियो । विणजारो धर
 नेह हो ॥ कां० ॥ कृतघन रा पाप सुं । चंपक
 कोठी हुवो तेह हां ॥ कां० ॥ ८ ॥ आयो दरी-
 याव ज्याज घेसनें । चाल्यो कितनिक दूर हो ॥ कां० ॥
 एतो विषय रस मोहियो । आयो सती हजूर हो
 ॥ कां० ॥ ९ ॥ मन मेल तुं मुक्त थकी । करा
 लील विलास हो ॥ कां० ॥ जावन गमावे क्युं
 वावली । हुं थारो दासानुदास हां ॥ कां० ॥ १० ॥
 रूप लावण सखण करी । तुं अपहर रे ऊणी-

वैद्य मानं नृपनो वचन, कर उपचार विसेत ।
नृप गंणी ताजा कीया, हरप्या लोक असेत ॥३॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥

(लत्तकरीयानी एदेशी)

—:८:—

वैद्य गुणे नृप रिंभीयां हों । राजन जी । दीया
गहने महल । भलांहि पधापचा हों उपगारी ॥
हुवे नाटक मुख आगले हों ॥ रा० ॥ करे मन
मानी सहिल ॥ भ० ॥ १ ॥ करी सगाड़ बाड़
नरी हो ॥ रा० ॥ चोखे लगन जांवाय ॥ भ० ॥
धवल मंगल गावे गोरड़ी हों ॥ रा० ॥ आंख
उमंग मन माय ॥ भ० ॥ २ ॥ केसरीयो बनड़ी
वस्यो हो ॥ रा० ॥ तुरा किलंगी रत्ताल ॥ भ० ॥
गप जादा जानी घला हो ॥ रा० ॥ नानी बड़ा
नदराल ॥ भ० ॥ ३ ॥ हाथी घोड़ांग घाटनुं हो
॥ रा० ॥ तोरख बांधो आय ॥ भ० ॥ विव सन्नेड
साचरी हो ॥ रा० ॥ बनो बनी दीया परगाय

पिछ निजरां नहिं पेखीयो हो ॥ सु० ॥ प्रीतम
 प्राण आधार ॥ भ० ॥ १० ॥ इम करतां रहतां
 यकां हो ॥ सु० ॥ बीतो कीतोयक काल ॥ भ० ॥
 हिवे दंपति मिले हो ॥ सु० ॥ ने सुखो वान
 रसाल ॥ ११ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दोहा ।
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

लघु यंधु निख भंजीयो, ज्येष्ठ यंधुने पत्र ।
 नगजादा पुन्य भई, आबो वंगा अत्र ॥ १ ॥
 तनाचार पाछो दीयो, नहीं आवरणे रंग ।
 गंग उपनो सोलनो, निख सु देह विंग ॥ २ ॥
 दोग नांग हि तुने, आबो धरी उमंग ।
 गप जनाइ वेष है, नाजो करनी अंग ॥ ३ ॥
 कोटवाल भाई पिने, खाल्या है निख दंग ।
 विचने निखो गुनान्तो, बाधो करक मंग ॥ ४ ॥
 नयो विखजाग पावना, नहु पिछ निर्लोपा आय
 वनानद भाई जिहा, इग वाना जय ॥ ५ ॥

सो करुं प्रणाम ॥ स० ॥ ५ ॥ नृप कहे रहो
 किए जायगा जी कांडं ॥ नृ० ॥ देव रमण हो
 पुगे सहिररे मांय, उहां रेवात छे माहरो, सेठ घो-
 ल्यां हो इम सीत नमाय ॥ स० ॥ ६ ॥ आतां
 जद उण मारगे जी कांडं ॥ आ० ॥ नद लेसां
 हो तुम वंधव देख, सीख दीधी कर खातरी इण
 बातरी हो नहीं जेज विसेस ॥ स० ॥ ७ ॥ कर
 असबारी नीतर्या जी कांडं ॥ क० ॥ दिन दूजे
 हो वतण नें सेल, याग घगीचा जायने पाछा
 पिता हो आया इण गेल ॥ स० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

गयसुता पति आवतां, देखी हृम्यां मन ।
 सेठ कहे किंपावनी, आज दिहाई धन ॥१॥

॥ हाल ॥ ८ ॥

। एक दिन लक्ष्मणान्त, ए देशा ।

गयसुता हंटा उतरा । मन माहे उमंग धरी ।
 हृम्य भरी आया दुकानें नेटन ए ॥ १ ॥ पण

॥ दत्त दृष्टांते नरभव दुर्लभ, पांसीने मत हारो
 रे लो । विषय कषाय तृष्णा लोभ, विक्रया पाप
 निवारो रे लो ॥ ध० ॥ ११ ॥ सुण उपदेश
 वैराग मन आंणी, चित्रत्तर नें दोनुं नारी रे
 लो । घररो भार सुंपी निज सुतनें, लीधो
 संयम सुखकारी रे लो ॥ ध० ॥ १२ ॥ पंच
 आचार महाव्रत पाले, दोषण सगलाई टाले
 रे लो । तप जप संयम सुध आराधे, आत्म
 गुण उजवाले रे लो ॥ ध० ॥ १३ ॥ कर अण-
 सण उपना देवलोकें, महद्धिंक पदवी पाई रे
 लो । लहि नरभव नें कर्म खपावी, मुगति जासी
 मुनिराई रे लो ॥ ध० ॥ १४ ॥ शील उपदेश
 धी ए विस्तारथो, पूज सबलदासजी चित्त
 लायो रे लो । ओझो इधको आयो हुवे तो,
 मिच्छामि दुक्कड़ं धायो रे लो ॥ ध० ॥ १५ ॥
 अष्टादम सां वाणवे वरसे, कीयो फलवधी
 चामातो रे लो । शीलरी महिमा
 जिण लील विलासो रे लो ॥ ध०

॥ इति धीतिलोकोन्मुखरी रो

विजयसेठ विजया सेठाणीरो चोढालीयो १०३

भर जोवने आइ तदा, सावी विजय कुंवार ॥२॥

आरम कारम सहकरथा, बीहाव कीयो तिणवार ।

जैसी विजया सुंदरी, जैसा विजय कुंवार ॥३॥

॥ ढाल ॥ २ ॥

(॥ भवदेवे जागी मोहणी ॥ एहनी देशी ॥)

सज सोलै तिणगार, भला जी कांइ आय उभी

हो रंग महेल मभार । नयण वयण स्त्रीया मोहणी,

आय उभा हो श्रीविजय कुमार ॥ १ ॥ सुण-

ज्योजी शील सुहामणी ॥ ए आंकड़ी ॥ कंत कहे

भले आवीया, दिन तीनज हो नहीं आवणजोग ।

स्युं कारण कहे सुन्दरी, इण अवसर हो किम

वरजो छो आज ॥ सु० ॥ २ ॥ कृष्ण पक्ष वरत

में लीया, इम सुणी हो आ थइरे, उदास । सुक्ल

पक्ष व्रत में लीया, दुजी परणों हो मांडो घरवास्त

॥ सु० ॥ ३ ॥ विजय कुंवर कहे हे सुन्दरी, सेजे

मिटियौ हो अनर्थनो मूल । जावजीव व्रत पालसां,

नर मुख हो रह्या छे भूल ॥ सु० ॥ ४ ॥ काम

भोग बहुभोगीया, वले भोगवीया हो अनन्ती